5. पुनि-पुनि ई पन्द्रह अगस्त हो

प्रस्तुत पद्यमे कवि देशमे शान्ति, समानता, वैचारिक शुद्धता, आर्थिक सम्पन्नता आ मानव कल्याणक हेतु सभक उत्थान सहित राष्ट्रकेँ रामराजक रूपमे विकसित होयबाक कल्पना कयलनि अछि । एहि आशाक सन्देश दैत कवि सर्व जन हिताय सर्व जन सुखायक कामना कयलनि अछि ।

देश शान्त हो
क्यो न क्लान्त हो
प्रान्त-प्रान्तमे सम विचार हो ।
सभ पवित्र हो
शुभ चरित्र हो
मित्रताक उन्मुक्त द्वार हो ।।
हृदय शुद्ध हो
मन न क्रुद्ध हो
ककरो गति नहि कतहु रुद्ध हो ।
आत्मज्ञान हो
सभक ध्यान हो
परिश्रमक नहि फल विरुद्ध हो ।।
जलक वृष्टि हो
धवल दृष्टि हो
कृषक हेतु नित नवल सृष्टि हो ।
पूर्ण अन्न हो
सभ प्रसन्न हो
देशक सुन्दरतम अदृष्टि हो ।।
अरि निराश हो
ओकर नाश हो
विश्वक रिपुता सर्वग्रास हो ।

श्रीक बास हो
ज्योति-लास हो
मानव-मुख पर मुक्त हास हो ।।
एक साज हो
एक बाज हो
सभक अधर पर एक गान हो ।
सभ सुकाज हो
रामराज हो
क्यो नहि ककरो हेतु आन हो ।।
हाहि बन्द हो
वायु मन्द हो
घूसक झंझावात नाश हो ।
राग दूर हो
द्वेष चूर हो
सभ तरि मलयानिलक वास हो ।।
'वाद' बाद हो
नहि विवाद हो
दूर एतऽ सँ अर्थतन्त्र हो ।
क्यो न नृपति हो
सभक सुगति हो
सर्वोदय जन-जनक मन्त्र हो ।।
क्यो न त्रस्त हो
कार्यव्यस्त हो
नव निर्माणक पथ प्रशस्त हो ।
अगति ध्वस्त हो
वस्तु सस्त हो
पुनि-पुनि ई पन्द्रह अगस्त हो ।।

-भीमनाथ झा

शब्दार्थ:

कलान्त	–	मलिन
उन्मुक्त	–	खुजल बन्धनहीन
रुद्ध	–	बाधित
वृष्टि	–	वर्षा
धवल	–	साफ
नवल	–	नव
अदृष्टि	–	भाग्य
अरि	–	शत्रु
रिपुता	–	शत्रुता
हास	–	हँसी
अधर	–	ठोर
लास	–	नाच

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्न:**

कहू तऽ-

(1) कवि देशमे कथीक स्थापना चाहैत छथि ?

(2) कवि परिश्रमक केहन फल चाहैत छथि ?

(3) एहि कवितामे कवि ककर नाश चाहैत छथि ?

(ख) **लिखित प्रश्न:**

एहि प्रश्नक उत्तर लिखू-

(1) कविक मनमे कृषकक लेल केहन कामना छनि ?

(2) 'सभक अधर पर एक गान हो' एहि पाँतीकेँ स्पष्ट करू ।

(3) प्रस्तुत कवितामे कवि केहन देश चाहैत छथि ?

अनुमान आ कल्पना:

नीचाँ देल गेल कविताक किछु पाँती छूटल अछि । पाँती गढ़ि कऽ खाली स्थानकेँ पूरा करू-

पानि आयल बुन्नी आयल ।

..... ॥

छाता ओढ़ने मुन्नी आयल ।

..... ॥

भाषा अध्ययन:

(1) नीचाँ देल गेल शब्दसँ तुक मिलबैत आनो शब्द लिखू-

जेना -	शान्त -	कलान्त	कान्त	उपरान्त	एकान्त
	पवित्र -	चरित्र	.....	.....	.....
	अन्न -	प्रशन्न	.....	.....	.....
	साज -	बाज	.....	.....	.....

(2) नीचाँ देल गेल शब्दक पर्यायवाची (समान अर्थ बाला) शब्द लिखू-

परिश्रम, कृषक, अरि, मुख, विश्व ।

(3) एहि शब्दकेँ शुद्ध कय लिखू-

देस, सान्त, विद्यान, पबित्र, नबल, निरास ।

योग्यता विस्तार:

(1) संगी, शिक्षक आदिसँ विचारि 'हमर विद्यालय केहन हो', शीर्षकक एकटा विवरण तैयार करू ।

अध्यापन संकेत:

शिक्षक लोकनिसँ निवेदन जे एहि कविताक शिक्षणक प्रारम्भ पूर्णत: बालकेंद्रित विधिसँ करथि । सर्वप्रथम ओ बच्चेसँ मनतव्य लेथि जे हमर देश केहन हो ? तत्पश्चात् कविताक व्याख्यामे प्राचीन ओ नवीन उदाहरणक प्रचुर उपयोग करथि ।

✦✦✦